RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2021-23

पिघलता हिमालय

वर्ष 38 अंक 33 हल्द्वानी सम्वत् 2079 सोमवार 16 जनवरी 2023 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिय,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

अतिक्रमण के सच में नेताओं का दरबार

भय से भरे लोगों की सोचो

सुप्रीम कोर्ट के फैसले का जवाब देना है अब

आज नहीं तो कल, सच को बताना-जानना जरूरी

कमजोर घुमन्तुओं की आड़ में दबंगों के कब्जे भी

कार्यालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी महानगर के वनभूलपुरा में रेलवे भूमि पर अतिक्रमण प्रकरण पर सुप्रीम कोर्ट के स्टे आर्डर आने पर मिष्ठान वितरण कर खुशियां मनाई हैं। खुशियां मनाने और फोटो खिंचवाने वाले जरूर अपने को व्यक्त कर रहे हैं लेकिन उन्हें तो अब भी भय सता रहा है जो हर हमेशा भय में पसरे हैं। ढोलक बस्ती के गरीब मजदूर, कबाड़ बीनने वालों के लिये इतनी भर राहत है कि उन्हें ठण्ड के इन दिनों में एकदम नहीं भागना पड़ा वरना तो जिस प्रकार का जीवन वह जी रहे हैं वह बहुत ही भय का वातावरण है।

अतिक्रमण के सच में नेताओं के दरबार खूब सजे हुए हैं। ये अभी भी सच को नहीं बता रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने रेलवे के दावे वाली 29 एकड़ भूमि में अतिक्रमण हटाने के उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के आदेश पर रोक लगाते हुए इसे मानवीय मुद्दा बताया और कहा 50 हजार लोगों को रातोंरात नहीं हटाया जा सकता। सुप्रीम कोर्ट का निर्णय तत्काल राहत देने वाला है लेकिन आगे से सबकुछ ठीक-ठाक हो इसके लिये अभी से चौकन्ना हो जाना चाहिये। सुप्रीम कोर्ट ने मामले पर अगली सुनवाई सात फरवरी को रखी है।

विवादित भूमि पर बसे लोग अतिक्रमण हटाने के आदेश के विरुद्ध प्रदर्शन करते हुए कह चुके हैं कि उनके पास भूमि का मालिकाना हक है। इस पर न्यायमूर्ति एस.के.कौल ने कहा कि इस विवाद का एक व्यावहारिक समाधान खोजने की जरूरत है। रेलवे के अनुसार उनकी भूमि पर 4365 परिवारों ने अतिक्रमण किया है। सम्बन्धित लगभग 50 हजार व्यक्ति भूमि पर निवास करते हैं। शीर्ष अदालत ने पूरे मामले को सुनने के साथ ही रेलवे तथा उत्तराखण्ड सरकार से हल्द्वानी में अतिक्रमण हटाने के हाईकोर्ट के आदेश के खिलाफ दायर याचिकाओं पर जवाब मांगा है। पीठ ने कहा है कि उन लोगों को अलग करने के लिए एक व्यावहारिक व्यवस्था आवश्यक है, जिनके पास भूमि पर कोई अधिकार न हो। साथ ही रेलवे की जरूरत को स्वीकार करते हुए पुनर्वास की योजना जरूरी है, जो पहले से ही मौजूदा हो सकती है। न्यायालय ने इसके साथ ही मामले की अगली सुनवाई के लिये सात फरवरी तय कर दी। शीर्ष अदालत ने कहा कि लोगों को बेदखल करने के लिये अर्द्धसैनिक बलों को लगाये आने का आदेश उचित नहीं कहा जा सकता।

शीर्ष अदालत के आदेश के बाद सभी कमजोर जनों को ठण्ड के इन दिनों में राहत मिली है। पर इस सच को स्वीकना चाहिये कि कमजोर घुमन्तुओं की आड़ में दबंगों के कब्जे भी होते रहे हैं। अपने वोट अपने रुतवे के लिये जमीन घेरकर माहौल बनाए रखने वालों को सावधान हो जाना चाहिये। जो लोग वाकेई में पहले से भी परेशान हैं और किसी भी कारण से बसे हैं, उनके पुनर्वास के लिये तैयारी हो। रेलवे की जरूरत देखते हुए उसकी भूमि कब्जा मुक्त हो लेकिन रेलवे की आड़ में किसी को उसकी भूमि से बेदखल भी नहीं किया जा सकता है। रेलवे भूमि का सच क्या है यह रेलवे और प्रशासन ने साफ करना चाहिये। आखिर सड़कों पर उतरने वाली भीड़ क्यों इतनी सहमी हुई थी कि पह आर-पार के इरादे से प्रदर्शन करने लगी।

इन सब बातों के अलावा इस पूरे मामले का राजनीतिक सच यह है कि अतिक्रमण को लेकर भाजपा और विपक्ष के रूप में देखा जा रहा है। चूंकि रेलवे भूमि के दावे वाले स्थान पर अधिकांश मुस्लिम परिवार हैं ऐसे में यह बात फैल गई कि उन्हें जानबूझ कर हटाया जा रहा है। जबकि इस प्रकार के किसी भी मामले में पार्टियों को नहीं उसके सच को सामने लाने की जरूरत है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

जोशीमठ की आपदा ने फिर बता दिया कि आपदा मनुष्यों ने थोपी है

उत्तराखण्ड के जोशीमठ की आपदा से हर कोई चिन्तित है, इतना खतरनाक दृश्य देख सबकी आंखों में आंसू हैं। प्रभावितों से मिलकर हर कोई भावुक हो जायेगा। अपने सपनों को अपने सामने बिखरता देख कौन चैन से रह सकता है।

प्राकृतिक आपदा के लिये प्रकृति के कारण होते हैं लेकिन इन आपदाओं के साथ-साथ मानव जाति ने भी अपने सुखभोग के लिये बहुत कुछ ओढ़ लिया है। जोशीमठ की आपदा ने फिर बता किया कि आपदा मनुष्यों ने थोपी है। बद्रीनाथ धाम के मुख्य पड़ाव जोशीमठ में भूस्खलन की भविष्यवाणी प्रो. गिरधर नेगी २००७ में अपनी पुस्तक 'भारत तिब्बत सीमा से' में कर चुके हैं।

आदिगुरु शंकराचार्य की तपस्थली जोशीमठ में हो रहे भूधंसाव से अब तक सैकड़ों भवनों में दरारें आ चुकी हैं। प्रो. नेगी ने २००५-०६ में गोपेश्वर पैदल यात्रा की की और २००७ में अपनी पुस्तक में ऐसी आपदाओं की आशंका जताई थी। बीते दशकों से हिमालयी क्षेत्रों पर शोध कर रहे प्रो.नेगी ने कहा कि सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक, राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय दबाव पहाड़ों पर बढ़ता जा रहा है। जिसके चलते पहाड़ अन्दर से खोखले होते जा रहे हैं और जगह-जगह आपदाएं आ रही हैं। जोशीमठ ने भी विभिन्न परियोजनाओं व नेशनल हाईवे के निर्माण के दौरान पहाड़ अन्दर से खोखले होकर दरक रहे हैं। भारी संख्या में वाहनों का दबाव भी इसके लिये भारी रहा है।

एक और सच है कि पहाड़ और आपदाओं को लेकर बराबर चिन्ता और मंथन होता रहा है परन्तु विकास की अन्धी दौड़ लगा रहे लोगों को खुश करने के लिये हमारी सरकारें भी चेती नहीं हैं। बड़ी परियोजनाओं को और बेशुमार चौड़ी होती सड़कों के कारण भी पहाड़ हिलते जा रहे हैं। नदियों, जंगलों से चोरी रुक नहीं पा रही है। जनसंख्या दबाव और बेरोजगारी से अत्यधिक भीड़ उन स्थानों पर लग चुकी है जहाँ पर यात्रियों के रुकने के पड़ाव होते हैं। रोजी-रोटी के लिये बाजार बनते और बसते जा रहे हैं लेकिन मानव जनित गलतियों की ओर एकाएक ध्यान नहीं जाता है। प्रकृति के थपेड़ों से दुःख पाने वाले स्थानों पर इस प्रकार की आपदाएं घोर पीड़ादायक हैं।

जोशीमठ में हुई आपदा ने यह बता दिया है कि हम चाहे कहीं पर हैं अपने मुताबिक भले ही रह रहे हों लेकिन यह गारन्टी नहीं है कि कल क्या हो जायेगा। जोशीमठ का भरा-पूरा क्षेत्र जिस प्रकार से दरक चुका है, दरारों से भवन टूटने को हैं, सड़कें, गलियां फट चुकी हैं वह नजारा बेहद खतरनाक है। आओ हम सब मिलकर सुख-शान्ति की कामना करें। जोशीमठ के पीड़ितों को हर सम्भव मदद के लिये हाथ बढ़ाएं और सीख भी लें।

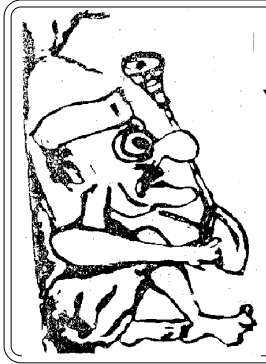

फसक

दाज्यू, लंघन और उल्लंघन होने ही वाला ठैरा

जमाने का मैनेजमेंट करने वाले तरबतर हो रहे है बल

दाज्यू, कार्बेट पार्क से सटे क्षेत्रों में साइलेंट जोन का उल्लंघन करने पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने वन विभाग की टीम के साथ मिलकर 6 रिजॉर्ट संचालकों का चालान कर दिया। दाज्यू, झमाझम के अवसर बनाने के लिये तो रिजॉर्ट खुले ठैरे, ये भला कितना चुप रह सकते हैं? लघंन और उल्लंघन होने ही वाला ठैरा। कितना ही समझा लो लेकिन सीमाएं लाघने वाले लांघ ही जाते हैं और उल्लंघन करने वाले तब तक करते हैं जब तक कि गरम चिमटा.....। अब रहने भी दो दाज्यू। बहुत कड़क ठण्ड पड़ रही है बाहर।

लोक गायक कवि हीरा सिंह राणा की पत्नी विमला राणा ने कुछ लोगों पर उनकी जमीन कब्जाने का आरोप लगाया है। वह कह रही हैं- 'मानिला में उनकी चार नाली 11 मुट्ठी जमीन है, इसकी रजिस्ट्री उनके पति के नाम पर है। जमीन वर्ष 2012 में खरीदी गई थी। जिसपर कब्जा कर लिया है। हाईकोर्ट फैसला हमारे पक्ष में है लेकिन प्रशासन उन्हें कब्जा नहीं दिला सका।' दाज्यू, देख लेना। सब ठीक-ठाक होना चाहिये। जमाने का मैनेजमेंट करने वाले तरबतर हो रहे हैं बल। कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत को फिर ताव आ गया और बोले- 'भाजपा लोकसभा चुनाव प्रचण्ड बहुमत से जीतेगी।'

कुमाऊँ विश्वविद्यालय गाल बजा रहा है कि वर्ष 2022 में उसे खूब सराहा गया है। दाज्यू, हमारी समझ नहीं आता है कि किसी बात की सराहना मिलती होगी जब प्रवेश और परीक्षा का हिसाब-किताब ही बेपटरी हो। कुर्सी में बैठक बकोध्याय तो हो ही जाने वाला ठैरा। उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय भी अब गढ़वाल में परिसर बनाने की तैयारी में है। दाज्यू, यूओयू के भी चर्चे कम होने का नाम नहीं लेते। सब तरबरत हैं बल। टनकपुर में पूर्णागिरी टैक्सी यूनियन व उचौलीगोठ टैक्सी यूनियन का विवाद सुलझने का नाम ही नहीं ले रहा है। दाज्यू, पूर्णागिरी सबकी भली करे। सारा झगड़ा रोजी-रोटी का ठैरा। हल्द्वानी में भी तो पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच और गर्वनमेंट सोसाइटी संस्था के बीच विवाद बना हुआ है। गोलज्यू मन्दिर के बगल में शनि मन्दिर बनाने से और ही हो रही है बल। संस्था पहाड़ियों की ठैरी और मन्दिर बनवाने वाले भी पहाड़ी ठैरे फिर यह कैसा विवाद है गोलज्यू जानें। लंघन-उल्लघंन सब हो रहा है जमाने में।

सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व मुख्यमंत्री त्रिवेन्द्र रावत पर लगे भ्रष्टाचार के आरोपों की सीबीआई जाँच वाले हाईकोर्ट के आदेश को रद्द कर उन्हें राहत दी। दाज्यू, त्रिवेन्द्र को जैसे ही राहत की सूचना मिली हमारे रमदा लगातार फुलझड़ी सुलगा रहे हैं। फुलझड़ी की चड़चड़-चड़चड़ आवाज में भी मजा आ जाने वाला ठैरा। विधान सभा बैक डोर भर्ती प्रकरण को लेकर हकाहाक रुकने वाली नहीं है। पूर्व नेता प्रतिपक्ष प्रीतम सिंह कह रहे हैं- 'पूर्व मुख्यमंत्रियों और विधानसभा अध्यक्षों पर भी कार्रवाई होनी चाहिये।' दाज्यू, हरदा भी चरचरी लगाने में पीछे नहीं हैं। कह रहे हैं- 'यूकेएसएसएसएससी' मामले को दबाने लिये विधानसभा कर्मचारियों को शिकार बनाया गया। दाज्यू, हमारा तो पहले से ही भुटवा बना हुआ है। मोतिया और बबलू पगलाए हुए घूम रहे हैं। कह रहे थे- 'चुनाव आ जाने दो सबको देख लेंगे।'

भयंकर ही हो रहा है हो। हरिद्वार में मानव तस्करी का भण्डाफोड़ हुआ है बल। दाज्यू, कुछ भी कहने लायक नहीं है। जनवरी का महीना आ चुका है कालेज वाले बच्चे अभी तक विषय ही बदलने में लगे हैं। उन्हें ये ही नहीं पता है कि क्या पढ़ना है और उनका भविष्य का होने जा रहा है। मानव तस्करी तो कहने भर को है, यह सब तो उससे भी खतरनाक है। कौन कालेज आता है, किसने फार्म भरा, क्या विषय चुनता है, कौन घूमता है.....। हे भगवान! नशे की गोली खाने वाले भी खूब घूमने लगे हैं। खुद को सताने वालों के लिये लंघन उल्लघंन क्याप्प ठैरा हो। जब तक चल रही है खुली सांस ले रहे हैं।

-तुम्हारा भुली झकरुवा

गणतंत्र दिवस पर छलिया और बागनाथ झांकी

दिल्ली/देहरादून। गणतंत्र दिवस पर इस बार पिथौरागढ़ का प्रसिद्ध छलिया नृत्य और बागेश्वर की झांकी बागनाथ के दर्शन होंगे। देश के तमाम राज्यों में से उत्तराखण्ड की झांकी प्रतिवर्ष नए रूप में आकर्षण का केन्द्र रही है। इस बार भी खूबसूरत झांकी राज्य की ओर से प्रदर्शित होगी।

इसके अलावा कुमाऊँ छोलिया विकास समिति के 18 सदस्यीय टीम को दिल्ली राजपथ पर अवसर दिया गया है। समिति के अध्यक्ष भीम राम कोहली ने बताया कि वह पिछले 30 वर्षों से छोलिया नृत्य विभिन्न मंचों के माध्यम से प्रदर्शित कर रहे हैं।

उत्तराखण्ड के विशिष्ट एनसीसी कैडेट भी गणतंत्र दिवस परेड, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिये दिल्ली में तैयारी कर रहे हैं। साथ ही शारदा नदी में डूबने से बचाने वालों को गणतंत्र दिवस के अवसर पर सम्मानित किया जाना है।

जोशीमठ आपदा पर

जोशीमठ और बलियानाले की स्थिति एक जैसी : प्रो. उपाध्याय

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के भू विज्ञान विभाग के प्रोफेसर राजीव उपाध्याय का मानना है कि जोशीमठ में भूमि खिसकने का मुख्य कारण इसकी भुरभुरी मिट्टी, तीखी ढलान और हिमालय के भूकम्पयी फाल्ट वाले क्षेत्र में स्थित होना है। इसके चलते यह अस्थिर प्रकृति का नजारा है।

प्रो.उपाध्याय कहते हे। कि जोशीमठन और नैनीताल का बलियानाले की स्थित एकदम समान है, जहाँ बलुवी मिट्टी के नीचे से पानी बहता है ओर जो इस मिट्टी को काटकर भूस्खलन को बढ़ा रहा है। पिछले वर्षों के दौरान जोशीमठ में बड़े निर्माण कार्यों से पहाड़ी पर दबाव ज्यादा बढ़ गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में अब जोशीमठ की पहाडी में तीव्र ढलान के कारण्रा भू धंसाव का स्थायी उपचार सम्भव नहीं है। लेकिन जो स्थान अभी प्रभावित नहीं हैं वहाँ निर्माण कार्यें पर रोक लगाकर पहाड़ियों में भार को कम करके उन्हें आपदा से बचाया जा सकता है। अत्यधिक दबाव के बारण जोशीमठ जैसी स्थिति अन्य भी हो सकती है।

ड्रेनेज सिस्टम न होना कारण : प्रो.चारु

नैनीताल। कुमाऊँ विश्वविद्यालय के वरिष्ठ भू वैज्ञानिक प्रोफेसर चारू चन्द्र पन्त का मानना है कि जोशीमठ में हो रहे भू धंसाव के पीछे वहाँ ड्रोनेज सिस्टम का न होना है। प्रो. पन्त का कहना है कि पूर्व में जोशीमठ यात्रा मार्ग का एक पड़ाव था जिसने अब एक शहर का रूप ले लिया है। शहर बसने के साथ ही यहाँ के ड्रेनेज सिस्टम पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये लेकिन ऐसा नहीं हुआ। प्रो. पन्त कहते हें कि जोशीमठ उच्च हिमालयी क्षेत्र में आता है और यहाँ डिप स्लोप हैं यानी की चट्टानें तीव्र ढलान की ओर झुकी हैं। निकासी न होने के कारण पानी जोशीमठ की पहाड़ियों में समा गया जिसने चट्टानों के भीतर जाने के बाद दबाव बनाना शुरु किया। यह पानी भुरभुरी मिट्टी के साथ नुकसान बनकर सामने है।

अंकिता को न्याय के लिये प्रदर्शन

पौड़ी/दिल्ली। अंकिता के हत्यारों को फांसी दिलाने की मांग को लेकर प्रदर्शन लगातार चल रहे हैं। तमाम पार्टियां और संगठन जगह-जगह धरना-प्रदर्शन करते हुए पीड़ित परिवार को न्याय की मांग कर रहे हैं। उत्तराखण्ड में जगह-जगह अंकिता के हत्यारों को फांसी की मांग सहित दिल्ली में भी प्रदर्शन हुए हैं।

उक्रांद ने कोटद्वार कोर्ट के निकट स्थित सिम्बल चौड़ चौराहे पर प्रदर्शन करते हुए ऐलान किया कि जब तक पीड़ित परिवार को न्याय नहीं मिलेगा यूकेडी आन्दोलन करता रहेगा। दल के केन्द्रीय कार्यकारी अध्यक्ष डॉ.शक्तिशैल कपरवाण ने कहा कि सरकार हर कीमत पर अंकिता के हत्यारों को बचाने का प्रयास कर रही है। इससे अपराधियों के मनोबल बढ़े हुए हैं। यूकेडी महानगर अध्यक्ष दीपक सिंह रावत, केन्द्रीय उपाध्यक्ष महेन्द्र सिंह रावत ने कहा कि दल उत्तराखण्ड को अपराध एवं भ्रष्टाचार मुक्त कराने के लिये अभियान चला रहा है।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

हल्द्वानी और अतिक्रमण .....तब यह मंजर नहीं था

उमेश पाण्डे

अतिक्रमण को लेकर कई तरह के बयान आ रहे हैं और नई पीढी के पत्रकारों को अतिक्रमण की पूरी जानकारी ना होने से अलग अलग कयास लगा कर बयान कर रहे हैं। सन् 1969 में मैं जब पहली बार हल्द्वानी आया था तब यह मंजर था ही नहीं जो आज आमआदमी को दिखाई दे रहा है। उस समय वर्तमान रेलवे स्टेशन से लेकर इन्द्रानगर से भी आगे तक रेलवे के यार्ड थे जहाँ वन ठेकेदारों के चीड़, शाल, शीशम की लकड़ी के बड़े-बड़े लठ्ठे स्लीपर रखे जाते थे और ठोकर लाइन से आगे को एक रेलवे लाइन बिछी थी। यहाँ से इन्हें रेल में लोड कर बाहर भेजा जाता था। कालान्तर में वन निगम बनने से वन ठेकेदारी बन्द हो गई और धीरे-धीरे पूरे यार्ड से लकड़ी खत्म हो गई और पूरा यार्ड खाली हो गया लेकिन लाइन नम्बर 17 में तब बसासत थी, स्कूल भी था। अब बात आती है अतिक्रमण की, जब रेलवे यार्ड खाली हुवा तो धीरे-धीरे लोगों ने यहाँ डेरा डालना शुरू किया और ढोलकी वालों का एक बहुत बडा कुनबा यहाँ आकर रहने लगा और ढोलक बस्ती के नाम से जाना जाने लगा। हांलाकि उस समय रेलवे व नगर प्रशासन ने इनका साथ नहीं दिया लेकिन जब कांग्रेस के नगर नेताओं ने मुख्यत: दिवंगत रामकृष्ण कोठारी जी ने हस्तक्षेप किया और ढोलक बस्ती वालों के राशन कार्ड, बिजली पानी के कनेक्शन के लिये इनको साथ लेकर नगर जलूस निकाला और एसडीएम के माध्यम से तत्कालीन काँग्रेस सरकार (उत्तर प्रदेश) को ज्ञापन सौंपा गया जिसके परिणाम स्वरूप इनको शह मिल गई इनके राशन कार्ड बन गये वोटरलिस्ट बन गई और नगर प्रशासन ने इनकी तरफ देखना बन्द कर दिया और धीरे-धीरे ढोलक बस्ती की आड़ में बाहर से अन्य लोगों ने भी यहाँ अपना बसेरा बनाना शुरू कर दिया और देखते छ एक बहुत बडा इलाका अतिक्रमण की जद में आ गया।नगर के विकास की बात पर जब रेलवे लाइन व रेलवे यार्ड के फैलाव की बात हुई तो पता चला कि पूरा रेलवे यार्ड तो अतिक्रमण की चपेट में है। और मजेदार बात जो लोग नगर विकास की बात करते थे वो इनके मददगार बन गये, बात हाईकोर्ट तक पहुँच गई और जब फैसला इनके विरूद्ध चला गया तो हाहाकार मच गया ।

दरअसल ढोलकबस्ती के लोगों की तायदात तो सैकड़ों में ही है असल खेल तो असरदारों का है।

अत: मेरा कहना है जनता सही जानकारी होनी चाहिये ना कि सुनी सुनाइ। आपने संक्षेप में सही लिखा है चर्चा जारी रहनी चाहिये। (जगदम्बा नगर हल्द्वानी)

लघु कहानियाँ -दीवान सिंह कठायत

गुंडे से गुड वे

बचपन से ही जीवन में कुछ बनकर दिखाने की ख्वाहिश ने बीरेन को जल्दी से जल्दी खास आदमी बनने के अनेक तरीकों पर चिन्तन-मनन को मजबूर कर दिया। खूब गहनता से विचार के उपरान्त सबसे उपयुक्त गुड वे उसे व्यवहारिक व सामाजिक अध्ययन करते हुए गुण्डागिरी में सूझा जिसके फलस्वरूप अपने घर से ही दादागिरी की शुरुआत करते हुए परिवार गाँव पड़ौस और इलाके से बढ़ते हुए शहर तक में अब उसकी धाक जमने लगी। लोगों में वह और उसके साथी बदनाम गुण्डों के रूप में कुख्यात होकर अपना दबदबा कायम कर चुके थे। बीरेन अब बीरू दादा के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। धीरे-धीरे निर्वाचन काल में चुनाव जीतने हेतु नेता उसकी सहायता लेने लगे और बीरू उनके उच्च सूत्रों से अभयदान पाने लगा। अच्छा समन्वय हो चला था। दोनों पक्ष लाभ ही लाभ पाकर अपना शुभ करने लगे थे.।

बीरू दादा को भी अब पद पाने का कीड़ा काटने लगा। अपने दबदबे के बल पर आगामी चुनावों में एक पार्टी का टिकट लेकर वह सहज ही विधायक बन बैठा और माननीय बन कम उम्र में ही खास आदमी हो चला। अब उसके साथी चमचे लोगों में उसका परिचय गुड वे पर चलने वाले सम्मानित व्यक्ति के रूप में देते हुए नहीं थकते थे। समय बीतता गया। गुण्डागर्दी के जिस पायदान पर चलकर वह फर्श से अर्श तक पहुँच पाया था उसका असर उसके बच्चों पर सहज ही पड़ गया। जवान होते बीरू दादा के बेटे बीर बहादुर ने परिवार से शीघ्र नाता तोड़ अपने पिता के ही विरुद्ध विपक्षी पार्टी से विधायक का टिकट लेकर विद्रोह कर दिया तथा विजयी होकर अपने पिता और उनके साथियों को अपमानित करना शुरू कर दिया। बीरू दादा को अब प्रौढ़ उम्र में अपनी साख बचाने अपने ही पुत्र से भारी संघर्ष करना पड़ रहा है और भला आदमी बनकर सहानुभूति जुटाने का भारी यत्न करते हुए वह यह नहीं समझ पा रहा कि, गुड वे अपनी इस स्थिति को कहूँ या बेटे की सफलता को? मन ही मन उसका मनन जारी है।

बैरी

'जाको राखे साइयां मार सके न कोय, बाल न बाँका कर सके जो जग बैरी होय' सामान्य से कुछ उच्च स्वर में भावुक होते हुए हिन्दी के अध्यापक किशोरी लाल मिश्रा ने इन पंक्तियों का वाचन करते हुए बच्चों को इसका अर्थ बताया, जिसका रक्षक ईश्वर है उसका बैरी भी कुछ नहीं बिगाड़ सकता। छठी कक्षा में अध्ययनरत महिराज को यह अर्थ अन्दर तक बेध गया। वह सोचते ही रह गया कि आँखिर उसके पिता का भय किसे और क्यों है? जो गुरू जी ने इतने साफ शब्दों में बैरी के प्रति घृणा का भाव रखते हुए उन्हें दुत्कार दिया।

अक्सर जब से महिराज ने होस सम्भाला हैश लोगों के मुख से उसने अपने पिता का नाम रमुवा बैरी ही सुना जो उसे तभी से कण्ठस्थ सा हो गया है। एक बार साहब ने स्कूल में मुआयने के दौरान जब वह तीन में पढ़ता था उससे, उसके पिता का नाम पूछा तो उसने तपाक से सिरी रमुवा बैरी उत्तर दिया था तभी कक्षा के सभी बच्चों के साथ-साथ साहब व शिक्षक भी ठहाके लगाकर हँसने लगे थे और साहब हँसते हुए कक्षा से बाहर चले गए थे। शिक्षक ने पीछे मुड़कर उसकी ओर बाद में देख लेने के अंदाज में आँखें तरेरते हुए देखा था। तब वह काफी डर गया कि आँखिर उसने ऐसा क्या गलत कह दिया? मगर सोचता ही रह गया था। उसने तब बैरी का अर्थ सहपाठियों से जानना चाहा तो बताने की बजाय साथी हँसते व बैरिक च्यल कहकर चिढ़ाते रहते।

आज जब कक्षा छरू में पहुँचकर भी वह बैरी का भाव नहीं समझ पाया और हिन्दी के मास्साब द्वारा बैरी पर टिप्पणी सुनकर वह तिलमिलाए मन से खुद पिता से ही इसका राज जानने को आतुर हो उठा। छुट्टी होते ही वह सीधे घर जाकर पिता से बैरी शब्द का राज जानना चाह रहा था कि उसे अपने पिताजी थल मेले में जाने की तैयारी करते हुए दिखे। पिता ने उससे भी मेले में चलने की बात की तो वह फूला न समाया पिछली सारी बातें भूल वह चटपट नये कपड़े पहनकर तैयार हो गया और पिता के साथ धामी की जीप में बैठकर थल पहुँच गया। वहाँ पहुँचते ही उसके पिता सीधे एक बड़े मंच पर जाकर रुके जहाँ लोगों द्वारा उनका भव्य स्वागत करते हुए उन्हें आगे की कुर्सी पर बिठाया गया। महिराज भी पिता के बगल में उनसे चिपककर बैठ गया और लाउडस्पीकर से घोषणा की गई 'अभी-अभी हमारे बीच क्षेत्र के प्रसिद्ध लोक गायक श्री राम सिंह महरा जी जिन्हें चाँचरी ,भगनौल व बैर गाने में महारथ हांसिल है जिससे लोग उन्हें रमुवा बैरी के नाम से अधिक जानते हैं, मंच पर पधार गए हैं. जल्दी ही उनकी कला मंच से सबके सम्मुख प्रस्तुत की जाएगी' सुना तो वह विस्मय से पिता के चेहरे की ओर ताकता ही रह गया। उसे अब बैरी का भाव व अर्थ कुछ-कुछ समझ में आने लगा था। शीघ्र ही उसके पिता के नाम को पुकारा गया और बैर भगनौल गीतों की फरमाइश पर पिताजी द्वारा उसे गाते हुए देख व सुन रहा था और उनके गीतों को सुनकर लोगों द्वारा ईनामों की बारिश को भी। बैरी शब्द के महत्व को अब वह भलीभाँति जान व समझ चुका था।

ज्योतिष की बातें - 110

17 जनवरी 2023 को शनि अपनी मूल त्रिकोण राशि कुम्भ में प्रवेश करेगा। वहाँ पर लगभग दो वर्ष तक रहेगा। फलदीपिका के अनुसार शनि त्रिषडाय भावों अर्थात 3, 6 व 11 वें स्थान पर शुभ फल प्रदान करता है साथ ही वृषभ और तुला राशियों के लिए शनि योगकारक भी होता है। 1, 2, 4, 8, 12 वें स्थान पर कष्टदायक होता है। अत: अगले दो वर्ष दो माह शनि अपने कारक विषयों में धनु, कन्या व मेष राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। वृषभ, मिथुन, सिंह व तुला राशियों को सामान्य फल प्रदान करेगा । कर्क, वृश्चिक, मकर, कुम्भ व मीन राशि के जातकों को कुछ कष्टकारक हो सकता है। विशेष बात- स्वराशि में गोचररत होने के कारण शनि शुभफल अधिक व अशुभ फल कम प्रदान करेगा।

22 जनवरी 2030 को शुक्र अपने मित्रराशि कुम्भ में प्रवेश करेगा, वहाँ पर मित्र ग्रह शनि भी साथ में होगा। अत: अगले 24 दिन शुक्र अपने कारक विषयों में मेष, मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ व मीन राशियों के लिए अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

षट्तिला एकादशी- माघ कृष्ण एकादशी को षट्तिला एकादशी कहा जाता है। बुधवार 18 जनवरी को षट्तिला एकादशी का पर्व मनाया जाएगा। इस दिन छह प्रकार से तिलों का व्यवहार किया जाता है। तिलों के जल से स्नान, तिल का उबटन, तिल से हवन, तिल मिले जल का पान, तिल का भोजन और तिल का दान करने से समस्त पापों का नाश हो जाता है ।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद

बालिका इंटर कालेज नमजला के मुख्य भवन के मरम्मत व रंग-रोगन के लिये धनराशि स्वीकृत

मुनस्यारी। 57 साल के बाद उत्तराखण्ड विद्यालयी शिक्षा द्वारा राजकीय बालिका इण्टर कालेज नमजला के मुख्य भवन के मरम्मत कार्य तथा रंग रोगन के लिए 7.82 लाख रुपए स्वीकृत हो गये है। कार्यदायी संस्था ग्रामीण निर्माण विभाग को धनराशि भेज दी गई है। क्षेत्र में बालिकाओं की शिक्षा के लिए बने एकमात्र राजकीय बालिका इण्टर कालेज नमजला का मुख्य भवन सन् 1965 में बनाया गया था। 57 साल में भवन की मरम्मत तथा रंग रोगन के लिए कोई भी बजट विद्यालय को नहीं मिला।

जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने इसका प्रस्ताव शासन को भेजा था।

बीते दिनों देहरादून जाकर महानिदेशक विद्यालयी शिक्षा बंशीधर तिवारी से मुलाकात कर विद्यालय की स्थिति से अवगत कराया। श्री जगत ने कहा कि गुणवत्ता के साथ कार्य हो इसके लिये क्षेत्र के लोग पूरा सहयोग करेंगे। इस पुराने स्कूल की मरम्मत मद में कार्य के लिये धनराशि स्वीकृत होने से क्षेत्र में खुशी है।

चौदास घाटी के ग्रामीणों ने ज्ञापन देकर सीमान्त की समस्याओं को बताया

धारचूला। चौदास घाटी के ग्रामीणों ने क्षेत्र की समस्याओं को लेकर उपजिलाधिकारी को ज्ञापन प्रेषित किया है। साथ ही कहा है कि हर विपरीत परिस्थिति में रहने वाले सीमान्तवासियों की समस्याओं का त्वरित निवारण हो। क्षेत्रवासियों ने तीशयनकंग में मुख्यमंत्री की घोषणा से बन रहे मिनी स्टेडियम की लम्बाई चौड़ाई को लेकर आपत्ति जताते हुए प्रशासन से हस्तक्षेप कर कार्यदायी संस्था को खेल मैदान के विस्तारीकरण के लिये निर्देशित करने की मांग की।

प्रकाश गुंज्याल के नेतृत्व में एसडीएम दिवेश शाशनी को दिए ज्ञापन में ग्रामीणों ने नारायण आश्रम मोटर मार्ग की बदहाल स्थिति सुधारने, पांगू-नारायण आश्रम सड़क निर्माण के दौरान फैंके गये मलबे से किसानों के खराब हुए खेतों को सुधारने की भी मांग की। इस अवसर पर महिमन सिंह ह्यांकी, बृजेश होतियाल, जगदीश सिंह, खुशाल गर्ब्याल, शीला ह्यांकी, सावित्री थे।

सुझाव

जोशीमठ के हित में

जोशीमठ क्षेत्र में भू-धंसाव के सम्बन्ध में गठित कमेटी द्वारा बताए गए कारणों से पूर्ण रूप से सहमत हूँ परन्तु टनल द्वारा हो रहे रिसाव के सम्बन्ध में कोई भी विभाग बोलने में असमर्थ क्यों हैं?

मैंने इस क्षेत्र में हाइड्रो परियोजना, भूस्खलन तथा अन्य इन्फ्रास्ट्रक्चर परियोजनाओं में कई वर्ष कार्य किया है। मेरे अनुभवों के अनुसार भू-धंसाव का मुख्य कारण टनल से हो रहे अत्यधिक मात्रा में पानी का रिसाव है क्योंकि पानी का बहाव इन्ही क्षेत्रों से काफी गहराई या मध्य गहराई से निकल कर काफी गति से बह रहा हैं जिसके फलस्वरूप इस प्रकार की स्तिति पैदा हो रहें ।

अन्य बताये गए कारणो में इतना रिसाव नहीं होता हें और बहुत धीरे धीरे भू-धंसाव होता है जो कि कई वर्षों से कई क्षेत्रों में देखा गया हें।

अगर टनल से निकल रहे पानी को अन्य क्षेत्र में डाईवर्ट तुरन्त प्रभाव से किया जाय तो काफी हद तक भू-धंसाव में कमी लाया जा सकता हें।

सादर।

-त्रिभुवन सिंह पांगती
अपर महानिदेशक(सेवानि.)
भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण
देहरादून

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

जोशीमठ की आपदा ने बहुत कुछ बदल दिया

भू-धंसाव से क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई है। पीड़ित परिवारों को पुनर्वास

जोशीमठ। प्रदेश के प्रमुख पड़ाव जोशीमठ में भू-धंसाव की आपदा ने बहुत कुछ बदल दिया है। लगातार हो रहे भू-धंसाव से पीड़ित परिवारों को जगह छोड़नी पड़ी है। जोशीमठ के हालात इतने खतरनाक हो चुके हैं कि नगर के सभी नौ वार्ड परसारी, रविग्राम, सुनील, अपर बाजार, नृसिंह मन्दिर, मनोहर बाग, सिंहधार, मारवाड़ी और गांधी नगर वार्ड में मकानों में दरारें आ गई हैं। यहाँ खतरे में घिर चुके परिवारों को प्रशासन ने शिफ्ट कर दिया। डरे-सहमे लोग अपने आप से सबकुछ छोड़कर भागने लगे।

हालातों को देखते हुए सीएम ने स्वयं भी समीक्षा की और मुख्य सचिव आपदा प्रबन्धन विभाग के अधिकारियों से रिपोर्ट ली। विशेषज्ञों के दल ने भी जोशीमठ का अध्ययन कर लिया है। इससे पहले भी विशेषज्ञों ने अपनी रिपोर्ट में चेतावनी दी थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि भू-धंसाव का कारण बेतरतीब निर्माण, पानी का रिसाव, ऊपरी मिट्टी का कटाव और मानव जनित कारणों से जल धाराओं के प्राकृतिक प्रवाह में रुकावट है, जो पूर्व-पश्चिम में चलने वाली रिज पर स्थित है। शहर के ठीक नीचे विष्णु प्रयाग के दक्षिण-पश्चिम में धौलीगंगा और अलकनन्दा नदियों का संगम है। नदी में होने वाला कटाव भी इस भू धंसाव के लिए जिम्मेदार है।

इस समय जोशीमठ थर्राया हुआ है। ऐतिहासिक ज्योतिर्मठ परिसर में दरारें आ चुकी हैं। पोस्टआफिस को भी शिफ्ट कर दिया गया है। सिंहधार वार्ड में होटल माउंट सहित खतरे वाली जगहों को खाली करा दिया गया है। जनता गुस्से से भरी और प्रदर्शन करते हुए कहा कि उनकी घोर उपेक्षा हो रही है। बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं पर रोक लगाने की मांग उठ रही है।

खतरनाक मंजर है जोशीमठ में, घर-घर सर्वेक्षण

मुख्यमंत्री ने क्षेत्र का दौरा कर पीड़ितों की हर प्रकार से मदद करने को कहा

जोशीमठ आपदा ने जिस प्रकार की पीड़ा दी है, उसकी भरपाई नहीं हो सकती। इस समय पूरे इलाके का खतरनाक मंजर है। यहाँ हर एक के चेहरे पर उदासी है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने क्षेत्र का दौरा करते हुए पीड़ितों को हर प्रकार से मदद करने की बात कही है। दूसरी ओर पौड़ी में जोशीमठ की समस्या को लेकर कई संगठनों ने धरना प्रदर्शन किया। गोपेश्वर में कांग्रेसियों ने प्रदर्शन करते हुए पुनर्वास में हीलाहवाली का आरोप लगाया है।

सरकार ने अस्थायी पुनर्वास केन्द्र बनाते हुए डेंजर जोन को पूरी तरह खाली कराने का कार्य शुरु कर दिया है। सचिवालय में हुई उच्चस्तरीय बैठक के बाद सरकार ने तत्काल निर्णय लेते हुए पुनर्वास के लिये पीपलकोटी और गोचर सहित अन्य स्थानों पर जगह तलाशी। गढ़वाल आयुक्त सुशील कुमार व आपदा प्रबन्धन सचिव रंजीत कमुमार सिन्हा समेत विशेषज्ञों की टीम ने जोशीमठ में भू-धंसाव को लेकर प्रभावित क्षेत्रों में घर-घर जाकर गहत सर्वेक्षण किया। टीम के अनुसार घरों में दरारें चिन्ताजनक हैं, अभी तत्कालिक रूप से प्रभावित लोगों को सुरक्षित स्थानों पर शिफ्ट किया गया है। सचिव श्री सिन्हा ने कहा कि स्थायी रूप से जो भी निर्माण कार्य हो सकते हैं, उनका प्लान तैयार किया जा रहा है। ड्रेनेज सिस्टम पर जल्द ही कार्य शुरु हो रहा है। सभी घरों को सीवर से कनेक्ट किया जायेगा।

चमोली प्रशासन द्वारा भू-धंसाव के चलते क्षतिग्रस्त मकानों के सर्वेक्षण के लिए वार्डवार कार्मिकों की तैनाती की है। जिलाधिकारी अभिषेक त्रिपाठी ने बताया है कि भूधंसाव के चलते भवन, होटल तथा अन्य परिसम्पत्तियों के नुकसान का आकलन टीमें कर रही हैं।

हिमालयी राज्यों के जल स्रोतों का संरक्षण होगा, जीबी पंत संस्थान ने १३ राज्यों को चिन्हित किया

परिक्रमा

अल्मोड़ा। हिमालयी राज्यों के प्राकृतिक जल स्रोतों के संरक्षण के लिये गोविन्द बल्लभ पन्त पर्यावरण संस्थान ने कवायद की है। संस्थान ने इस कार्य के लिये 13 हिमालयी राज्यों को चिन्हित किया है। पहले चरण में संस्थान ने इन प्राकृतिक स्रोतों की जियो टैगिंग का कार्य पूरा कर लिया है। अब इन्हें पुनर्जीवित करने के लिये प्रयास किये जायेंगे।

जी.बी.पन्त पर्यावरण संस्थान के निदेशक प्रो.सुनील नौटियाल के अनुसार उत्तराखण्ड, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम, त्रिपुरा, नागालैंड, अरुणांचल प्रदेश, असम, पश्चिम बंगाल, जम्मू कश्मीर समेत 13 हिमालयी राज्यो में वर्ष 2013 में कराए गए एक सर्वे में पाँच हजार नौ सौ जल स्रोत ऐसे पाए गए थे जिनमें करीब पचास प्रतिशत पानी कम हो गया था।

नौटियाल ने बताया कि हिमालयी राज्यों में स्थित ये प्राकृतिक जल स्रोत जीवनदायिनी हैं। लेकिन प्राकृतिक आपदा या जंगलों के अवैज्ञानिक दोहन होने से ये धीरे-धीरे विलुप्त हो रहे हैं। पहले चरण में वैज्ञानिक इन नौले धारों और जल स्रोतों के जलस्तर कम होने या सूखने के कारणों का पता लगाएंगे। उन्होंने बताया कि जमीन का धंसना, प्राकृतिक आपदा सहित इसके कई कारण हो सकते हैं। जिनका पता लगाया जाएगा। उन्होंने बताया कि आमतौर पर पर प्राकृतिक जलस्रोत मानसून काल में अपने पूरे प्रवाह में बहने शुरू हो जाते हैं परन्तु इसके बीतते ही इनमें पानी कम हो जाता है। पानी के उतार चढ़ाव का पता लगाने के लिये विलुप्त हो रहे नौले धारों पर मानसून काल व इसके बाद के समय में नजर रखी जायेगी। इन प्राकृतिक स्रोतों को पुनर्जीवित करने के लिये मुख्य रूप से चाल खाल विकसित किये जायेंगे।

भर्ती प्रक्रिया में धांधली का आरोप, हंगामा

रैमजे कालेज में मचे हंगामे के बाद विद्यालय प्रबन्धन ने साक्षात्कार स्थगित किया

अल्मोड़ा। रैमजे इण्टर कालेज में हाईकोर्ट के विशेष आदेशों के बाद सहायक अध्यापक के विभिन्न पदों के लिए साक्षात्कार आयोजित किये गये थे परन्तु भर्ती प्रक्रिया में विद्यालय प्रबन्धन एवं प्रधानाचार्य पर अनियमितता बरतने का आरोप लगाते हुए जन संघर्ष युवा मंच के कार्यकर्ताओं ने रैमजे प्रांगण में प्रदर्शन किया। इस दौरान कार्यकर्ताओं एवं विद्यालय प्रबन्धन के बीच हंगामेजदार बहसबाजी हुई। पुलिस हस्तक्षेप के बाद हंगामा शान्त हुआ। साथ ही साक्षात्कार स्थगित करना पड़ा।

रैमजे इण्टर कालेज में सहायक अध्यापक (एलटी) के लिए साक्षात्कार आयोजित किये गए लेकिन साक्षात्कार की प्रक्रिया को लेकर विद्यालय प्रांगण में हंगामा हुआ। इस दौरान साक्षात्कार पैनल में बैठे विद्यालय प्रबन्धन, इसाई मिशनरी पदाधिकारियों एवं प्रधानाचार्य और युवा मंच कार्यकर्ताओं के बीच साक्षात्कार में धांधली को लेकर आरोप प्रत्यारोप में झड़क देख पुलिस को आना पड़ा। युवाओं ने रैमजे विद्यालय प्रबन्धन पर मनमर्जी करते हुए साक्षात्कार के नियमों का पालन नहीं करने का आरोप लगाया। प्रदर्शन करने वालों में अक्षित पाण्डे, अभिषेक बनौला, भूपेन्द्र भोज थे। उन्होंने कहा कि इसमें जरूर गड़बड़ हो रही है। दूसरी ओर प्रधानाचार्य वीटी विल्सन ने कहा कि विद्यालय प्रबन्ध ने कोर्ट के आदेशानुसार दो दिन तक सहायक अध्यापक के विभिन्न पदों के लिये साक्षात्कार आयोजित किया था, लेकिन प्रक्रिया में कुछ तकनीकी खामी आने के कारण साक्षात्कार फिलहाल स्थगित किया जाता है। उन्होंने बताया कि आगे उन्हीं अभ्यर्थियों को अवसर दिया जायेगा जिन्होंने आवेदन किया है। साक्षात्कार की अग्रिम सूचना पंजीकृत डाक से भेज दी जायेगी।

सेब प्रोत्साहन के लिये किसानों की पसंद का शासनादेश

बगीचे की स्थापना करने वाली संस्था की होगी पूर्ण जिम्मेदारी, ८० फीसदी सहायता

देहरादून। कृषि मंत्री गणेश जोशी की पहल पर से काश्तकारों के सुझावों के अनुसार शासनादेश जारी हो गया है। एप्पल मिशन योजनाओं सेव उत्पादन को बढ़ावा देते हुए कृषकों की आय में वृद्धि किये जाने व स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार सृजन करने के लिये कृषकों व पौधशाला स्वामियों में मिले सुझाव के बाद यह आदेश हुआ है। इस आदेश में तीन माडलों को सम्मिलित किया गया है। इससेएम-9, एम-7 एवं अन्य सीरीज के क्लेनल रूट स्टाक आधारित सुपर प्रजातियों के बगीचों को स्थापित करने में आसानी होगी। इससे तीसरा लाभ सीडलिंग रूटस्टक आधारित अति सघ्न बगीचे के लिए भी लाभकारी होने की बात कही गयी है। इस आदेश के अनुसार काश्तकार स्वेच्छा से अपनी आवश्यकता अनुसार किसी भी तरह के सेब बागानों की स्थापना कर सकता है। बगीचों की स्थापना के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त रोपण सामग्री का राज्य के बाहर से आयात किया जाता है तो पौधों का रैंडमली डीएनए फिंगर प्रिन्ट लिया जायेगा तथा काराकोट लागू किया जाएगा। आदेश के अनुसार सेब बागानों की अधिकतम लागत 12 लाख का 80 फीसदी व अधिकतम 9.60 लाख राजहायता देय होगी। अधिकतम लागत का 20 फीसदी कृषक को वहन करना होगा। राज्य में सेब बागान स्थापित करने वाले कृषकों को विभाग संस्था पंजीकृत फर्मों, कम्पनियों नरसरियों औद्यानिकी एवं वानिकी विवि भरसार, सीआईटीएच-मुक्तेश्वर आदि द्वारा नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्रदान करने के लिये प्रशिक्षण दिया जायेगा। कृषक अपने अंश की धनराशि के लिये सहकारिता विभाग से व्याज रहित ऋण भी ले सकता है। काश्तकारों को 0.04 हेक्टेयर से 0.40 तक (2 नाली से 20 नाली तक) समानुपातिक लाभान्वित किया जाएगा। कीवी उत्पादन के लिये चमोली, रुद्रप्रयाग, पौड़ी, बागेश्वर, चम्पावत चुके गये हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच हल्द्वानी

इस बार उत्तरायणी के मौके पर कई सवाल उठ गए

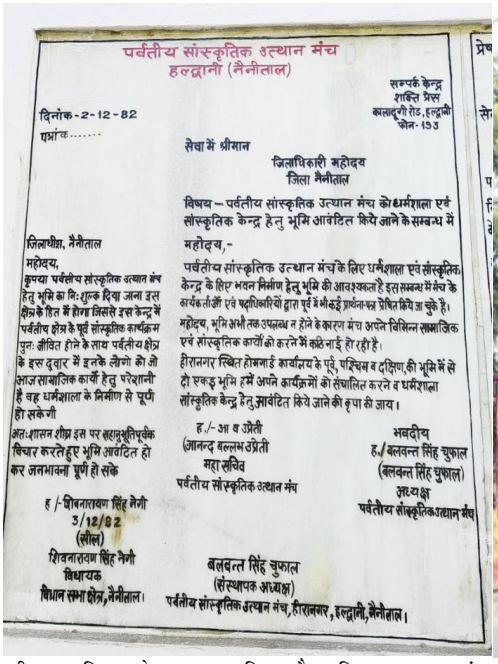

पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच
हल्द्वानी (नैनीताल)

सम्पर्क केन्द्र
शक्ति प्रेस
कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी
फोन- 193

दिनांक-2-12-82
पत्रांक.......

सेवा में श्रीमान
जिलाधिकारी महोदय
जिला नैनीताल

विषय – पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच को धर्मशाला एवं सांस्कृतिक केन्द्र हेतु भूमि आवंटित किये जाने के सम्बन्ध में

महोदय,-

पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच के लिए धर्मशाला एवं सांस्कृतिक केन्द्र के लिए भवन निर्माण हेतु भूमि की आवश्यकता है इस सम्बन्ध में मंच के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों द्वारा पूर्व में भी कई प्रार्थना-पत्र प्रेषित किये जा चुके है।

महोदय, भूमि अभी तक उपलब्ध न होने के कारण मंच अपने विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों को करने में कठिनाई हो रही है।

हीरानगर स्थित होमगार्ड कार्यालय के पूर्व, पश्चिम व दक्षिण, की भूमि में से दो एकड़ भूमि हमें अपने कार्यक्रमों को संचालित करने व धर्मशाला सांस्कृतिक केन्द्र हेतु आवंटित किये जाने की कृपा की जाय।

ह./- आ व उप्रेती
(आनन्द बल्लभ उप्रेती
महा सचिव
पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच

भवदीय
ह./ बलवन्त सिंह चुफाल
(बलवन्त सिंह चुफाल)
अध्यक्ष
पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच

जिलाधीश, नैनीताल
महोदय,
कृपया पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच हेतु भूमि का निःशुल्क दिया जाना इस क्षेत्र के हित में होगा जिससे इस केन्द्र में पर्वतीय क्षेत्र के पूर्व सांस्कृतिक कार्यक्रम पुनः जीवित होने के साथ पर्वतीय क्षेत्र के इस दुवार में इनके लोगो को जो आज सामाजिक कार्यों हेतु परेशानी है वह धर्मशाला के निर्माण से पूर्ण हो सकेगी
अतः शासन शीघ्र इस पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करते हुए भूमि आवंटित हो कर जनभावना पूर्ण हो सके

ह /- शिवनारायण सिंह नेगी
3/12/82
(सील)
शिवनारायण सिंह नेगी
विधायक
विधान सभा क्षेत्र, नैनीताल।

बलवन्त सिंह चुफाल
(संस्थापक अध्यक्ष)
पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच, हीरानगर, हल्द्वानी, नैनीताल।

हीरानगर स्थित गोलज्यू का मन्दिर और परिसर पर लगा मंच का पट्ट जिसमें 1982 में पिघलता हिमालय के शक्ति प्रेस कार्यालय को सम्पर्क केन्द्र का उल्लेख है। फोन नम्बर भी सम्पादक पिघलता हिमालय के नाम का है- 193.

भूमि के झगड़े में गोलज्यू और शिवज्यू का जाप

दो संस्थाओं के झगड़े में रिसीवर तक की नियुक्ति

प्रशासन द्वारा रिसीवर बैठाते ही मंच पक्ष गरम

कालाढूंगी विधायक के ऐलान पर रिसीवर हटा

प्रशासन फिलहाल रुक गया लेकिन जाँच तो होगी

सोसाइटी ने कहा- हक की लड़ाई जारी रखेंगे

पि.हि.प्रतिनिधि

हल्द्वानी। इस बार की उत्तरायणी कई सवाल उत्थान मंच को लेकर खड़े कर चुकी है। दो संस्थाओं के झगड़े में रिसीवर बैठाने तक की स्थिति हो गई। यह मामला दो-चार दिन का नहीं है। दरअसल पर्वतीय समाज की एकता अखण्डता के नाम पर बनी संस्था का भविष्य क्या होगा इसको लेकर पिछले कई सालों से सवाल उठने लगे हैं। इस बार दो संस्थाओं के दावे के बाद मामला हरा हो चुका है।

हीरानगर स्थित पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच की उत्तरायणी में इस बार घमासान दिखाई दी। यह विवाद हीरानगर स्थित गोलज्यू मन्दिर के पास शिव मन्दिर बनाने के साथ ही शुरु हो गया। असल में उत्थान मंच की कार्यकारिणी के लोगों का कहना था कि गोलज्यू उनके अराध्य हैं और उनके पास कोई दूसरा मन्दिर न बने। जबकि शिव मन्दिर बनाने वाली संस्था गवर्नमेंट सोसाइटी का कहना था कि गोलज्यू भी शिव का स्वरूप हैं और शिव देवों के देव महादेव हैं।

पड़ताल करने पर पता चलता है कि असल में झगड़ा गोलज्यू और शिव को लेकर नहीं बल्कि अपनी-अपनी शक्ति दिखाने का ज्यादा है। उत्थान मंच की भूमि को लेकर पहले से भी विवाद रहा है। शुरुआती दौर में जब यह भूमि पर उत्थान मंच का स्वर्णयुग चला पर्वतीय समाज के बेहतरीन लोग इसमें जुड़ते चले गये और इस बड़ी संस्था का प्रभाव इतना ज्यादा हो गया था कि दूसरे शहर जिले व प्रदेश में भी इसकी एकता और हल्द्वानी के उत्तरायणी का उदाहरण दिया जाने लगा। लेकिन बाद के सालों में मंच की उतार-चढ़ाव में घिर गया। ढील मिलते ही इसमें ऐसे लोग घुसने लगे जिन्हें अवसर की तलाश थी। हालातों को देख कई सक्रिय किनारा करने लगे। किन्हीं कारणों से मुंह से भले ही कोई कुछ न कहता हो लेकिन वह धीरे-धीरे किनारा करते रहे। बाद को यह हाल हो चुका था कि संस्था में क्या हो रहा है, कैसा हो रहा है, कब चुनाव हो रहे हैं, कौन पदाधिकारी होंगे, इतनी बड़ी संस्था का क्या हिसाब-किताब है, क्या इसके उद्देश्यों को पूरा किया जा रहा है.............कौन कहता? पर्वतीय एकता के लिये जुटना एक बात है लेकिन जिस एकजुटता के लिये संकल्प था उसका क्या? इन्हीं कारणों के मंच की वह पुरानी ताकत अब नहीं रही है। पुराने समय में एक आवाज में चारों ओर से पर्वतीय समाज सड़कों पर उतर आता था। दूसरी ओर हीरानगर की इस भूमि पर अपना दावा करने वाली संस्था गवर्नमेंट आफिसियल को-आपरेटिव हाउसिंग सोसायटी लि. मजबूत होती चली गई। इस सोसाइटी ने अपनी लड़ाई को कानूनी बनाते हुए यह बताया है कि भूमि पार्क की है और इस पर अवैध तरीके से कब्जा हुआ है।

इस प्रकार भूमि के झगड़े में गोलज्यू और शिवज्यू का नाम जाप चल रहा है। बात जब पहाड़ीपन की आती है तो मत उत्थान मंच की ओर है लेकिन उत्थान मंच के स्वरूप और उद्देश्य को लेकर मंथन-चिन्तन करने वाले अपना मत किसी दूसरे को दें तो कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिये।

भूमि विवाद के बाद प्रशासन द्वारा रिसीवर बैठाने की तैयारी कर दी गई। इससे उत्थान मंच की कार्यकारिणी ने मंथन किया और अपील की कि यह सब पर्वतीय समाज का है तो इसमें किसी बाहरी को क्यों आने दिया जाए। इसी बात को लेकर महापंचायत का ऐलान हुआ और कुछ लोग जुट गए। जिला प्रशासन को ज्ञापन सौंपा गया। प्रशासन रेलवे भूमि अतिक्रमण मामले पर पर पूरी तरह उलझा है, ऐसे में वह भी बच कर चल रहा है। इस बीच कालाढूंगी विधायक बंशीधर भगत के कहने असर हुआ मंच के पक्ष में हुआ। श्री भगत ने मंच के पक्ष में शासन-प्रशासन से बात की और बताया कि मंच की भूमि पर रिसीवर नहीं बैठाया जाएगा। जिलाधिकारी धीराज गर्ब्याल ने नौ दिन बाद सिरीवर हटा लिया लेकिन स्पष्ट किया कि पूर्व में आदेशानुसार समिति की जाँच चलती रहेगी। दूसरी ओर गर्वनमेंट सोसाइटी का कहना है कि वह हक की लड़ाई जारी रखेंगे।

कुल मिलाकर इस बार की उत्तरायणी में मंच को लेकर चल रहे विवाद हरे हो गये। इसका भविष्य कैसा हो, इसको लेकर तमाम पक्ष सोचने लगे हैं। क्या पर्वतीय समाज की इतनी बड़ी संस्था और हीरानगर स्थित सम्पत्ति का क्या होगा?

मंच के संरक्षक और महासचिव रहे थे आनन्द बल्लभ उप्रेती

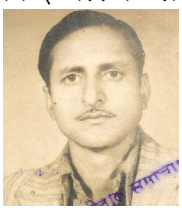

पिघलता हिमालय के संस्थापक व सम्पादक स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती पर्वतीय सांस्कृतिक उत्थान मंच के संरक्षक महासचिव रहे हैं। पर्वतीय संस्कृति के अभियान में उन जैसे लोगों ने जिस त्याग के साथ कार्य किया उसका परिणाम था कि हल्द्वानी की मण्डी में उत्थान मंच का परिसर बना लेकिन समय के साथ आज यह विवाद की जड़ बन चुका है। स्व.उप्रेती को कभी चाह नहीं रही कि उनके नाम का पत्थर इस मंच पर लगे लेकिन उत्थान मंच ने शक्तिप्रेस कार्यालय के नाम का पत्थर आज भी परिसर पर लगाया है।

दरअसल पर्वतीय समाज की एकता अखण्डता के लिये इस मंच का उदय हुआ था। क्योंकि एक दौर ऐसा आया जब समाज में दबदबा बनाने के लिये मनमर्जी होने लगी थी और पर्वतीय समाज को उपेक्षा की ओर धकेला जा रहा था, ऐसे में एक बड़े संगठन की आवाज उठने लगी। इस संगठन का उद्देश्य अपनी संस्कृति को संरक्षित करने व प्रतिभाओं को अवसर देना था। साथ ही समक्ष लोगों को समाज के लिये नेक कार्यों से जोड़ना भी। मंच आज जिस भूमि पर है उसके लिये बड़ा आन्दोलन चला और भवन निर्माण हुआ। इसमें आर्थिक रूप से कमजोर लोगों को विवाह के लिये निःशुल्क सुविधा दी जाती थी। मंच की भूमि पर समाज के सहयोग से जितना कुछ भी निर्माण हुआ और गोलज्यू का मन्दिर बना, इसके पीछे किसी प्रकार की कमाई का मोह नहीं था और समाज को बहुत उम्मीदें इस मंच से रही हैं। साथ ही यह भी देखने को मिला की उत्थान मंच की ताकत देखते हुए राजनीतिक लोग इसमें आकर अपने प्रचार के लिये जुड़ने की लालसा रखने लगे। समय बीतता गया लेकिन हीरानगर स्थित गवर्मेंट आफिसियल्स कोआपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी लि. इस भूमि के लिये जागरुक रही। वही मामला आज तक बना हुआ है। बाद-बाद को स्थिति यह हो गई कि समाज में बढ़ती उच्छृंखलताओं को देख आनन्द बल्लभ उप्रेती ने उत्थान मंच को अलविदा कह दिया। हालांकि मंच उन्हें नहीं छोड़ना चाहता था। (हल्द्वानी स्मृतियों के झरोखे से पुस्तक में स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती ने खूब लिखा है।)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मकर संक्रान्ति/उत्तरायणी की हार्दिक शुभकामनाएं-

प्रकाश सिंह रावत
हयात पैराडाइज
बस स्टेशन
मुनस्यारी

पांगती पुस्तक भण्डार
डी.एस.पांगती
डीडीहाट

प्रवीण सिंह जंगपांगी
मेघा टैण्ट हाउस, खड़ी बाजार
थल

भूपेन्द्र सिंह पांगती
पांगती वस्त्र भण्डार, खड़ी बाजार
थल

होटल माँ नन्दादेवी
एण्ड बारात घर
नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया
एण्ड सन्स
मुनस्यारी

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल
एवं जनरल आर्डर सप्लायर्स
फोन सम्पर्क- 05961-222236
8958525979, 9411134775

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

Enjoy Beauty of Himalaya at
MARTOLIA LODGE
Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari
A Home Away From Home & Home Stay
Phone: (05961) 222287

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग,माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

MARTOLIA FURNITURE
A unit of Martolia Enterprises
Pilikothi
Haldwani
Mob- 8057167777, 7906752084, 8650427229

सप्ताह के पर्व

माघ कृष्ण पक्ष
16 जनवरी- षट तिल एकादशी व्रत
19 जनवरी- प्रदोष व्रत
20 जनवरी- रटंती कलिका पूजन
21 जनवरी- मौनी अमावस्या

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, कालाढूंगी रोड, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादक: श्रीमती गीता उप्रेती
फोन/फैक्स: (05946) 264013, 9458961490, 9411770280, 9411301014, 9410713075,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com
पत्र व्यवहार के लिये पते-
जे0के0पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)